प्रथम - अंक

# रवानी रिपोर्ट

सत्येन्द्र सिंह भारद्वाज

रवानी-रिपोर्ट के प्रत्येक बाते प्रमाण-युक्त है। समाज का कोई भी वर्ग पत्राचार द्वारा जान सकता है। सिर्फ वे पत्र के साथ जवावी अपना पता लिखा पत्र भी शामिल करे।

पत्राचार :

**आचार्य अमर सिंह 'शास्त्री'**

मु०-बेलवरगंज (मंदिर के सामने)

जिला-पटना, पिन-800 007 (बिहार)

रवानी रिपोर्ट अपने प्रथम अंक में भारत के कुछ क्षत्रीय समाज जैसे-हस्तीनापुर के पाण्डववंशी, द्रुपद-नरेश, हैहय वंशी, यदुवंशी, जरासंध वंशी चन्द्रवंशी क्षत्रीय (रवानी), काशी-नरेश, अंग, वत्स, कौशल, चेदी, विदर्भ-नरेशों की वंशावली प्रस्तुत कर भारत के समस्त क्षत्रीय को एक सूत्र में बांधकर हक की लड़ाई को आगे बढ़ाने की एलान करती है। क्षत्रीय जातियाँ विपत्ति के कारण लोहार, कसेरा, सोनार, ब्राह्मण जैसे अनेक जातियों के साथ मिला हुआ है लेकिन शादी-विवाह अपने समाज के अन्दर करते हैं।

रवानी-रिपोर्ट क्षत्रीयों की वास्तविक परिचय की मांग करती है। वे अपने रिपोर्ट को दिये गए पता पर भेजे। छान-बीन के बाद सही निकली, तो हम रवानी-रिपोर्ट के अगले अंक में आप के समाज का परिचय जरूर निकालेगें। इससे क्षत्रियों का संबंध मजबूत होगा। एक कार्यक्रम के तहत विचार-विमर्श कर क्षत्रीय मंच में शामिल कर लिया जाएगा। रवानी-रिपोर्ट भारत के समस्त क्षत्रियों को एक सूत्र में बांधने का क्रांतिकारी प्रयास करेगा जो अभी तक नहीं हुआ है। हम सारे क्षत्रियों के समाजिक मतभेदों को मिटा देगें और उन्हें फिर से राजगद्दी पर बैठा देगें। चूँकि रवानी की वास्तविक समाजिक प्रतिष्ठा को समाज के हर बुद्धिजीवी वर्ग छिपाकर लोगों को गुमराह किया है। इसके प्राचीन संस्कृति और धरोहरों को अभी तक मिटाने का प्रयास किया जा रहा है। अतः इस पुस्तक के अध्ययन कर समाज के हर वर्ग के सामने रखे और वस्तु-स्थिति की जानकारी दें तथा जरासंधवंशी (रवानी) कुल के संबंध में टिप्पणी, लेख, अभिलेख हो, उनकी जानकारी पत्राचार द्वारा दें इसके लिए रवानी-रिपोर्ट आप का आभारी रहेगा।

प्रिय पाठक,

मैं यह पुस्तक नहीं लिखता। लेकिन मैं जब एक पन्ने का ऐतिहासिक पम्पलेट निकाला जिसमें लिखा था, ''रवानी गर्व से कहो, हम चन्द्रवंशी राजपूत हैं।'' समाज के हर वर्ग राह चलते टोका-टोकी एवं टिप्पणी करना प्रारंभ कर दिया। सबों का प्रश्न यही था कि रवानी कब से राजपूत हो गया ? अतः मैं इस पुस्तक में सबसे पहले इस प्रश्न का उत्तर दिया हूँ। इसके अलावा अन्य प्रश्न के उत्तर भी है।

जैसे–नागवंशी, परमार, चन्देल-राजपूत कैसे चन्द्रवंशी है ? क्या रिपुण्जय के बाद जरासंध वंशी राजा का राज्य खत्म हो गया ? काशी नरेश, द्रुपद नरेश हस्तिनापुर के पाण्डवों का जरासंध के साथ कोई सम्बन्ध था ? यदुवंश में पैदा हुए विभिन्न राजाओं का वंशावली। क्या हैहेय वंशी क्षत्रीय यदुवंशी थे। यादव यदुवंशी होने से पहले चन्द्रवंशी हैं कैसे। जरासंध-वंशी (रवानी) कुल में पैदा होने वाले राजा ब्राह्मण भी हो गए हैं, वे ब्राह्मण कौन है ? इसका संक्षिप्त परिचय है, लेकिन विस्तार से परिचय अगले अंक में करेंगे। रवानी कुल में पैदा हुआ कण्व ऋषि ने राजपूत की उत्पत्ति की, इसकी भी चर्चा अगले अंक में करेगे। जरासंध को जिन्दा करनेवाली जरादेवी कौन है ? नन्द के अत्याचार से भागा हुआ रवानी बुंदेलखंड में जाकर कैसे राजविस्तार किया और उनके आगे के वंशजों का क्रमावार नाम और सन्। बिहार के बाहर राजपूत के विभिन्न शाखाओं की क्या दशा है ? रवानी के सामाजिक और राजनैतिक उत्थान के लिए किए गए विभिन्न प्रयास का वर्णन मैं इस अंक में किया हूँ। राजा नहुष के दुर्वासा ऋषि का श्राप तथा रवानी और कहार में क्या अन्तर है ? आदि

जरासंध वंशी (रवानी) की वंशावली (विष्णु-पुराण से) ब्रह्मा जी के पुत्र अत्री से सोम और सोम से चन्द्र तथा चन्द्र से पैदा हुए सभी चन्द्रवंशी कहलाते हैं। चन्द्रवंशी कुल में पैदा हुए राजाओं का नाम क्रमावार इस प्रकार है, पुरुरवा, अयु नहुष जो स्वर्ग विजयी था जिन्होंने सप्त-ऋषि के कांधों पर रखे डोली में सवार होकर स्वर्ग महारानी से विवाह करने जा रहे थे। दुरवासा ऋषि को

लंगड़े होने के कारण चाबुक से मार खानी पड़ी, अत: वे राजा को सर्प ( नाग) बनने का श्राप दे दिये। लेकिन विनती करने पर कलियुग में श्राप मुक्त होने का बरदान मिल गया। नहुषवंशी जो नागवंशी है अब नाग से मनुष्य हो गए है अत: नागवंशी राजपूत भी चन्द्रवंशी है। नहुष स्वर्ग विजयी से पहले ययाति को पैदा कर चुके थे। ययाति से ही पुरु और यदु पैदा हुए। पुरु के कुल में पैदा हुए राजाओं का नाम जनमेजय, प्राचिन्वान, प्रवीर, मन्यु, अरूपद, सुदवत, बहुचाव, संयत्ति, अहोगयाति रोद्रख, ऋतेयु, हन्तिनार, तंसु, भृत्य, सुरोध, दुष्यंत पैदा हुए। दुष्यंत का विवाह विश्वामित्र की पुत्री शकुन्तला से हुई जिससे भरत पैदा हुआ, भरत के नाम से इस देश का नाम भारत हुआ। भरत से भारद्वाज ऋषि पैदा हुए जिसके कारण रवानी लोगों का गोत्र भारद्वाज है। इसी प्रकार अभवमन्यु, वृहतक्षेत्र, महावीर्य, नर, गर्ग, ( 1 ) **सुहोत्र** से हस्ती और ( 2 ) **दिवोदास** पैदा हुआ। हस्ती ने ही हस्तीनापुर बसाया था। हस्ती से ( 3 ) **अजर्भीढ़** से ( 4 ) **कण्व,** ऋष, नील पैदा हुआ। ऋष से सामवर्ण से कुरु पैदा हुआ। कुरु ने कुरुक्षेत्र बनवाया था। कुरु से आगे सुधनु च्यवन, कृतक, विषमृथ, उपरीचरवसु, वृहद्रथ पैदा हुआ जो मगध देश का राजा बना। वह काशी नरेश के दोनों पुत्री के साथ विवाह किया था। जब राजा वृहद्रथ को संतान की प्राप्ति नहीं हो रही थी तो वह गौतम के पुत्र चण्डकौशिक से आम का फल प्राप्त किया और वह दोनों रानियों को आधा-आधा खिला दिया जिससे आधा-आधा दो भाग दोनों रानी से बालक पैदा हुआ। जिसे रानियों ने रनिवास में फेकवा दिया। वहीं 'जरा' नाम की एक ब्रह्मचारिणी रहती थी। जो नारद के गुरु काल या कालूबाबा की पुत्री थी। इन दोनों टुकड़ों को जोड़ दी। नारद जी को यह बात पहले से पता था और वह इसी कार्य के लिए जरा को मगध में भेजे थे। 'जरा' इस बालक को राजा वृहद्रथ को समर्पित की। चुकी यह बालक जरा द्वारा संध ( जोड़ा) किया गया था। इसलिए राजा ने इस बालक का नाम 'जरासंध' रखा और 'जरा' को गृहलक्ष्मी के रूप में पूजने का आदेश अपने परिवारों में दिलवा दिया। आज भी रवानी खानदान के लोग इनको जरा, वंदी, बन्नी, बनदेवी के नामों से पूजते आ रहे हैं। महाराजा ने पूरे

मगध साम्राज्य में जरा को छठी माई के रुप में पूजने का आदेश दिलवाया जो आज भी लोग कार्तिकमाह में छठी माई की पूजा बड़े घूम-धाम से करते हैं।

चेदी राजस्व तुवसो रासी त्पुत्रो वृहद्रथ: मगधेषु उत्पन्न पुण्येन,

निर्माती सो गिरिव्रज: तस्य न्याये यगे सौ जरासंध महावला ।।

[ हरिवंश पुराण । ]

**अर्थ**–चेदि देश के राजा बसु के पुत्र वृहद्रथ उत्पन्न हुआ जो अपने पूण्य प्रताप से गिरिव्रज का निर्माण किया। उनके वंश में जरासंध सबसे प्रतापी राजा हुआ।

**वंश क्रम**–चेदि नरेश उपरिचर बसु का पुत्र बसु राज्य विस्तार हेतु मगध आये तथा राजगृह के पहाड़ी भागों में ही अपना निवास स्थान बनाये। क्योंकि वहाँ का दृश्य अत्यंत मनोरम था, सोण नदी राजगृह के पहाड़ियों का मालाकार घेरे हुए था। इसी नदी का नाम मागधी भी है, इसलिए बसु ने अपने राज्य का नाम मगध रखा। बसु का पुत्र वृहद्रथ थे जो मगध साम्राज्य का काफी विस्तार किया। वृहद्रथ ने दुनिया का सबसे शक्तिशाली पुत्र पैदा किये जिनका नाम जरासंध था, वे अपने राज्य का विस्तार विदेशों में भी फैलाया, कहा जाता है कि पतालपुरी (अमेरिका) के उपाच्य राजा को भी बंदी बनाया था तथा बंदी मुक्त होने पर उपाच्य राजा ने अपनी पुत्री की विवाह अर्जुन से किया था।

**जरासंघ** के कुल में पैदा होने वाले अन्य राजाओं के क्रमावार नाम इस प्रकार है–सातकी, सहदेव, सोमापी, देवापि, श्रुतवत, आयुतयुस, निरमित्र, सुक्षत्र, वृहत क्रर्म्मन, सेनजीत, शत्रुजय, विप्र, सुचि, क्षेम्य, सुब्रत, धर्म्म, सुक्षम, दृढ़सेन, सुमति, सुबल, सुनीत, सत्यजीत, विश्वजीत, रिपुंजय।

रिपुंजय को उन्हीं के मंत्री शुनक ने मार दिया तथा अपने पुत्र प्रद्योत को गद्दी पर बैठाया। नन्द के अत्याचार से जरासंध वंशी (रवानी) की एक शाखा बुंदेलखंड में जाबसी जो गंगा के दक्षिण विंध्याचल के पहाड़ी स्थान है। इनका गढ़ महोवा राज्य में है अत: ये अपने को गढ़ महोवा निवासी बताते है।

इनकी राजधानी खजुराहो में है। इनका गोत्र चन्द्रावत है और ये अपने को चन्देल राजपूत बताते हैं। जरासंघ-वंशी चन्देल चन्द्रवर्मा 800 ई० में बुन्देलखंड के प्रथम राजा हुए।

**चन्देल राजपूत ( रवानी ) के अन्य राजाओं के नाम और राज्यकाल**–ननूका और वाकपति (831 ई०) जयत्की, विजयसत्की और रहिला (900 ई० तक) रहिला के पुत्र हर्षदेव ने ही महीपाल को 972 ई० में कनौज के गद्दी पर बैठाया था। सातवाँ राजा लक्षवर्मा (930 ई० से 950 ई०) जो कालिंजर किला, गोदा, स्वासा, कौशल काशमीरी, मैथिल, मालावा, चेदी और गुजर पर विजयी पाई। यशोर वर्मा और इसका पुत्र धांगा (950 ई० से 1002 ई० तक), गन्डा, विद्याधर, विजयपाल, देववर्मा इसका भाई कीर्तिवर्मा (1002 ई० से 1100 ई०) सुलक्षमन वर्मा, जयवर्मा का भाई पृथ्वीवर्मा (1100 ई० से 1128 ई०) मदनवर्मा (1128 ई० से 1165), परमार या परमाल (1165 ई० से 1200 ई० तक), पृथ्वीराज ने परमाल और शूरवीर आल्हा ऊदल दोनों को पराजित कर दिया, लेकिन परमार के पुत्र समरजीत ने पुनः महोवा के गद्दी प्राप्त कर ली। 1202 ई० में कुतुबुदीन ऐबक ने चन्देलों पर नन्द के तरह ही अत्याचार किया और पुनः कीर्ति को नष्ट कर दी गई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हर युग में जरासंध वंशी राज किया है और एक बार राज करने का समय फिर आ गया है, सभी चन्द्रवंशी (रवानी) और चन्देल एक हो जाए क्योंकि लोकतंत्र बहुमत का युग है जिसकी संख्या और शक्ति है उसी की शासन और सुरक्षा और रोजगार है।

कालिंजर, गोदा, स्वासा, कौशल, काश्मीर, मैथिल, मालवा, चेदी, गुजर और नेपाल तथा असम पंजाव, हरियाणा में भी रवानी (जो नन्द के अत्याचार के बाद भागे हैं) की वंशावली और अन्य ऐतिहासिक साक्ष्य मिलेगी उसे मैं अगले अंक में निकालूँगा। पर यहाँ पर रवानी भाइयों से अपील है बिहार के बाहर राजपूत के अधिकांश शाखा आप का परिवार है उन्हें नहीं त्यागें। जरासंध वंशावली को देखने पर राजा सुहोत्र (1) नं० पर अंकित है। सुहोत्र

के काश्यप से काशी राज पैदा हुए। इसके आगे क्रमवार राजा नाम राष्ट्र, दीर्घतपा, धन्वन्तरि, केतुमान, भीमरथ, दिवोदास, प्रतर्दन पैदा हुआ। प्रतर्दन को वत्स, ऋतध्वज भी कहते हैं। इससे अलर्क, सन्तति, सुनीथ, सेकुतु, धर्मकेतु, सत्यकेतु अन्यान्य राजा हुए। नं० (2) दिवोदास से च्यवन, सुदास, सौदास, सहदेव सोमक, पृषत, द्रुपद, धृष्टधुम्न, धृष्केतु पैदा हुए।

नं० (1) और नं० (2) से सावित होता है कि द्रुपद और काशी नरेश जरासंध वंशावली में ही है। **क्या जरासंध वंशी ( रवानी ) और हस्तीनापुर के पाण्डवों के साथ भी कोई संबंध है ?** जी हाँ। जरासंघ वंशावली में नं० (3) पर हस्ती से अजमीढ़ राजा हुए जिससे ऋष से सुधनु, सुहोत्र, च्यवन कृतक, विषमृथ, उपरिचर बसु से वृहद्रथ से जरासंध पैदा हुआ।

अजमीढ़ से ही भीमसेन, दिलीप, प्रतीप, शान्तनु पैदा हुआ। शान्तनु के दो रानियाँ थी, एक गंगा से भीष्म तथा सत्यवती से विचित्रवीर्य से धृतराष्ट्र और पाण्डु पैदा हुआ। घृतराष्ट्र से कौरवों का जन्म हुआ दुर्योधन प्रधान थे तथा पाण्डु से पाण्डव पैदा हुए जिसमें युधिष्ठिर प्रधान थे।

इस प्रकार हम पाते हैं कि मगध के जरासंध वंशी और हस्तीनापुर के पाण्डुवंशी को मिलाकर हम अजमीढ़ वंशी कह सकते हैं क्योंकि दोनों के जनक राजा अजमीढ़ ही हैं।

## आखिर यदुवंशी और हैहेय वंशी क्षत्रीय चन्द्रवंशी कैसे हैं ?

जरासंध-वंशावली को देखने पर राजा ययाति महान राजा हुए है। राजा ययाति के दो पत्नी थी। पहली पत्नी शुक्राचार्य की बेटी देवयानि से यदु तथा दूसरी पत्नी सर्मिष्ठा से पुरु पैदा हुआ। पुरु के वंश में ही जरासंघ पैदा हुए तथा यदु के क्रमानुसार इस प्रकार है। यदु के पुत्र सहस्त्रजीत से सतजीत का पुत्र हैहेय था। **हैहेय** से हैहेयवंशी क्षत्रीयों की उत्पत्ति हुई। हैहेय के महिष्मान पुत्र हुआ महिष्मान महिष्मति पूरी नामक नगर बसाया। आगे इसका वंश भद्रश्रेण्य, दुर्दम, धनक, कीर्तवीय के पुत्र सहस्रार्जून पैदा हुआ जो एक महान सम्राट था इसने रावण को पशु के समान खुँटे से बाँध रखा था। इसका वध

परशुराम ने किया था। इसका पुत्र जयध्वज के आगे, भरत, वृष, मधु से वृष्णि पैदा हुआ, वृष्णि कारण ही वे वृष्णिवंशी भी कहलाते है। इसी के आगे विदर्भ, कैशिक, वसुदेव पैदा हुआ। वसुदेव की चार रानियाँ थी एक रानी कंस की बहन देवकी थी। जिससे कृष्ण पैदा हुआ दूसरी रानी से बलराम पैदा हुआ।

मैं यदुवंश के वंशावली अत्यंत संक्षिप्त में प्रकट किया है। अगले अंक में विस्तार से चर्चा करूँगा। इस वंशावली को पढ़ते ही पता चलता है कि यदु और हैहेय चन्द्र के संतानों में शामिल है अत: यदुवंशी और हैहेय वंशी चन्द्रवंशी ही है।

जरासंध-वंशावली को देखने से पता चलता है कि कुछ चन्द्रवंशी राजा ब्राह्मण भी हो गए हैं। जैसे अवमन्यु के पुत्र नर और अजमीढ़ के पुत्र कण्व। कण्व से कण्व संज्ञक ब्राह्मण हुए। रिपुण्जय के मरने के बाद शुनक वंशी राज किया। लेकिन कण्व संज्ञक ब्राह्मण इसे अंत कर कण्ववंशी शासन चलाया। इसके बाद महानन्द आया जो चन्द्रवंशी को पूरी तरह से नष्ट कर देने का बीड़ा उठाया। इसी के अत्याचार के कारण ये रवानी कहलाये। जो आजतक कह रहे है। इसी प्रकार अन्य ब्राह्मण पराशर, गौतम, गर्ग, चण्डकौशिक रवानी कुल के परिवार ही है इन लोगों के विस्तार से चर्चा हम अगले अंक में करेंगे। राजपूतों की उत्पत्ति कण्व ऋषि ने किया था इसकी चर्चा भी हम अगले अंक में करेंगे। सरयुपारिण ब्राह्मण रवानी के वंशज है कैसे अगले अंक में मिलेंगे।

रवानी-रिपोर्ट के प्रथम अंक में एक ऐसे व्यक्ति की चर्चा कर रहा हूँ, जो रवानी कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लिए है।

रवानी कुल भूषण आचार्य अमर सिंह 'शास्त्री' जी का जन्म 18 अगस्त 1935 ई० में हुआ। इनका जन्म स्थान हिलसा जो पहले पटना जिला में था लेकिन वर्तमान में नालन्दा जिला हो गया है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गुरुकूल देवरिया में मिली। बाद में पाणिणी-महाविद्यालय (मोती-झील) काशी बाराणसी में शिक्षा प्राप्त किये। ये प्राचीन व्याकरण के आचार्य वेद, उपनिषद के ज्ञाता

है । संस्कृत और हिन्दु-संस्कृति के सोलहों संस्कारों के प्रशिक्षक हैं । ये पूजा-पाठ, यज्ञोपवीत (जनेऊ), शादी-विवाह इतना विधिवत कराते हैं कि कुलीन ब्राह्मण भी इन्हीं को इन संस्कारों को कराने के लिए बुलाते है । इनका पता रवानी रिपोर्ट के प्रथम पृष्ठ पर है । ये रजिस्ट्रर्ड होमियो पैथ चिकित्सक भी हैं ।

आजादी के पहले भारत 600 देशी राज में विभक्त था, अधिकांश पर क्षत्रीयों का शासन था । लौह पुरुष सरदार बल्लब भाई पटेल के इशारे पर सभी राज्यों ने विलियन पत्र पर हस्ताक्षर कर देशी राज्यसंघ में शामिल हो गया । भारत के संविधान निर्माताओं ने संविधान उन्हीं के हक में बनाया जिनके विशेष कार्य और व्यवसाय थे जैसे–चमड़ा के कार्य करने वाले, श्मसान घाट पर कार्य करने वाले, धोबी घाट पर कार्य करने वाले, काष्ठ के काम करने वाले । लेकिन क्षत्रीय का क्या कार्य था मात्र शासन और सेना । यह दोनों भी आरक्षण के ही गोद में पल और पनप रहा है । आज भारत के समस्त क्षत्रीय अपने सारे जमीन और ऐतिहासिक स्थलों को सरकार को देकर हाथ मल रहा है । इसके कोई निश्चित व्यवसाय न रहने के कारण इसकी स्थिति हरिजनों से भी बेकार हो गई है । अत: सरकार को कर्त्तव्य बनता है कि इसके हितों की रक्षा की जाए क्योंकि भारत के समस्त ऐतिहासिक स्थल जैसे राजगृह, कुरुक्षेत्र, राजाओं के किलों से अच्छी राष्ट्रीय आय मिल रही है । प्राचीन क्षत्रीय सैनिक के वंशज की स्थिति तो और बेकार हो गई है जिनका एक मात्र कार्य था अपने देश और समाज की रक्षा कर बलिवेदी पर चढ़ जाना । अंग्रेजी शासन काल में ही ये बेकार होते चले गए हैं । अत: भारत सरकार और समस्त राज्यों के सरकार इनपर ध्यान दे नहीं तो प्राचीन राजाओं के वंशज कहने वाले इस धरती पर से सदा सर्वदा के लिए समाप्त हो जाएँगे । बिहार के जरासंध वंशी (रवानी) और बिहार के बाहर के राज्यों में अन्य राजपूतों की दशा आखिर कौन सुधारेगा ? बिहार के रवानी, हरियाना, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और पंजाब में राजपूत, कश्यप, मेहरा, प्रवार, तोमर, गहलौत ये सभी राजपूत शाखा के हैं लेकिन या तो नन्द के अत्याचार से या मुस्लिम के अत्याचार से कहारों

के संवर्ग में च । गया है । इन्हें कहार कहने पर चिढ़ते है, शादी विवाह अपने परिवार में कर' हैं । जल्द संस्कार देकर राजपूत वर्ग में शामिल किया जाए टूटे विखरे परिवा' को जोड़ो, शासन की दिशा को मोड़ो ।

बिहार की राजपूतों की रीढ़ ही तोड़ डाली आजादी के बाद के बिहार सरकार ने अखिल भारतीय चन्द्रवंशी क्षत्रीय की स्थापना 1906 ई० में हुई और रवानी जाति को जरासंध वंशीय चन्द्रवंशी क्षत्रीय के रूप में नाम दर्ज कर लिया गया । भारत सरकार ने यू० पी० और विहार सरकार स्वीकृति नकल भी भेजी ।

**1. भारत सरकार द्वारा स्वीकृति–**

जे० एच० हटन महोदय, आई० सी०, एस० डि० एस० सी० सि० आई० ई०

भारत सेन्सस कमिश्नर,

पत्र-संख्या आई / ई० एन० एम० एन० दिल्ली से ता०-24/2/31 प्रधानमंत्री अखिल भारतीय चन्द्रवंशी क्षत्रीय महामभा को सूचित करते हैं'' हिज इक्सेलेन्सी वायसराय को प्रेषित टेलिग्राम-संख्या-150 ता०-4/2/31 के उत्तर में सूचित किया जाता है कि सभी प्रान्तों को आदेश भेजा जा चुका है कि चन्द्रवंशी क्षत्रीय (रवानी) स्वीकृत किया जाय ।

ह० जे० एच० हटन

भारत सरकार सेन्सस कमिश्नर

**2. यू० पी० सरकार द्वारा स्वीकृत**

न०-केम्प / 73

ए० सी० टरनर महोदय, एम० वी० ई०, आई० सी० एस० डिपुटी

सेक्रेटरी, यू० पी० सरकार,

अपने पत्र संख्या कैम्प 73, कैम्प, फैजावाद ता०-दिसम्बर 1930 को प्रधानमंत्री, अखिल भारतीय चन्द्रवंशी क्षत्रीय महासभा वायसराय गोरखपुर को लिखते हैं'' अपने 1ली, दिसम्बर 1930 जो आवेदन पत्र यू० पी० के माननीय

गवर्नर को भेजा है, उसके उत्तर में मुझे कहने की आज्ञा मिली है कि रवानी समुदाय के लोगों की 1931 की जनगणना में अपने आपको क्षत्रीय या चन्द्रवंशी क्षत्रीय (रवानी) लिखवाये तो सरकार को कोई आपत्ति नहीं है।

ह०-ए० सी० टरनर

डिप्टी सेक्रेटरी।

**3. बिहार सरकार द्वारा स्वीकृति-**

सेन्सस सुपरिनटेन्डेन्ट का कार्यालय, बिहार, हजारीबाग द्वारा प्रेषित पत्र संख्या-1167 हजारीबाग, दिनांक-27 अगस्त, 1940 डॉ० मुरलीधर सिंह प्रधानमंत्री अखिल भारतीय चन्द्रवंशी क्षत्रीय महासभा आरा को।

महाशय,

आपके पत्र संख्या 253 ता०-21 अगस्त 1940 के उत्तर में सूचित किया जाता है कि गणकों 'क' दिया जाता है, वे वही नाम दर्ज करेगें, जो उनको बतलाया जायगा। यदि आपके जाति के लोग चन्द्रवंशी क्षत्रीय लिखवाना चाहेंगे, तो जाति वही लिखी जाएगी। 370 रु० व्यय होंगे, अतिशीघ्र जमा कर दिया जाए।

ह०-डब्लू० जी० आर० पर० सेन्सस

सुपरिन्टेन्डेन्ट

**4. 10 नवम्बर 1978 के बिहार सरकार की चतुराई भरी स्वीकृति-**

पत्र संख्या - 1348 / ए०

पी० डब्लू० टंडन महोदय, आ० सी० एस० अन्डर सेक्रेटरी, बिहार सरकार, पटना - 7 अप्रील 1939 को, डॉ० मुरलीधर सिंह प्रधानमंत्री अखिल भारतीय चन्द्रवंशी क्षत्रीय महासभा, आरा।

(1) आपके ता० 29 नवम्बर, 1938 के मिमोरियल के उत्तर में आपको सूचित करता हूँ। प्रांतीय सरकार को आगामी जनगणना में रवानियों को चन्द्रवंशी क्षत्री लिखने का आदेश निकालने में कोई आपत्ति नहीं है। बशर्त्ते कि आगामी जनगणना में जाति का आधार कायम रहे।

(2) राष्ट्रीय आधार पर नि:शुल्क शिक्षा का विचार बिहार सरकार द्वारा हो रही है अत: यह संभव नहीं है कि किसी खास जाति को या समाज को विशेष सुविधा दी जाए।

(3) नियुकितयों में हिन्दू और मुसलमानों को पिछड़े वर्गों को ध्यान में रखा जाता है और चन्द्रवंशी क्षत्री को पिछड़ा वर्ग में रखा गया है। इसलिए इनलोगों को विशेष सुविध देना संभव नहीं है।

ह०-पि० डब्लू० टंडन।

(4) बिहार सरकार की जंनता सरकार पत्र संख्या–11-अ-1-50/78-756 दिनांक-10 नवम्बर, 1978 पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण सूचि में इस जाति को चन्द्रवंशी (कहार) लिखा है।

बिहार सरकार से प्रश्न,

बिहार सरकार का कौन-सा अधिकार बनता है कि वह किसी जाति के नाम में छेड़-छाड़ करें। चन्द्रवंशी नाम के आगे कहार लिखने का अधिकार उसे किसने दिया ?

**चन्द्रवंशी क्षत्रीय ( रवानी ) भाइयों से अपील**–जानते हैं इसका क्या परिणाम हुआ। हमारा बहुत बड़ा वर्ग जो सबल था, वह या तो कुर्मी में या राजपूत के साथ विलय हो गया। यह षडयंत्र इसलिए रचा गया था कि चन्द्रवंशी सत्ता से दूर रहे। आप जानते हैं, बिना सत्ता के किसी भी जाति का विकास करना संभव नहीं है। चन्द्रवंशी क्षत्रीयों के नाम जरासंध वंशी चन्द्रवंशी राजपूत के रूप में दर्ज करवाये। इसका परिणाम होगा कि हमारी आबादी बढ़कर दो करोड़ से ऊपर हो जाएगी। हम बिहार में सत्ता में आ जाएगें। आरक्षण के जिस कटेगरी में हमें रखा गया है वह ऊँट के मुँह में जिड़ा का फोरन के बराबर है, क्योंकि न तो इससे नौकरी में पदोन्नति होती है, न विधान-सभा और लोक-सभा के लिए आरक्षित ही है।

कहने का अर्थ शासन का द्वार एकदम बंद है। आजकल तो शासन में रहने वाले व्यक्ति परीक्षा-फल को मनो-मोताबिक टाईप करवा देते हैं। जिस जाति के शासन में पहुँच नहीं है उस जाति के नाम को लिस्ट से हटवा दिया

जाता है । इस प्रकार हम देखते हैं कि जात के नाम पर नौकरी पाना आजकल असंभव हो गया है तथा आप के पास पैसा हो तो नौकरी है । कहार शब्द रहने के कारण गरीब बच्चों की बड़ी परेशानी होती है, हर जगह पर उन्हें चिढ़ाया जाता है, जिसके कारण वह पढ़ाई छोड़कर असमाजिक रूप धारण कर लेता है । पैसों वालों को यह दिक्कत नहीं होती है, बचपन से अभी तक इस शब्द के कारण कष्ट सहना पड़ा है, मैं ही जानता हूँ । यही कारण है कि अपने घर पर क्षत्रीय भवन लिखा जो सच्चाई है । एक और परेशानी है कि बिहार के बाहर के राज्यों में रवानी पूर्ण रूप से राजपूत कहलाता है, इस नाते हम अपने ही परिवार से कट जाते हैं ।

बिहार के राजपूतों में ही चंदेल, नागवंशी, परमार सभी जरासंध वंशी हैं, जो पुरे राजपूत के 90% यही वर्ग के लोग है । मुझे आशा है कि यदि रवानी को राजपूत पद दिला दिया जाए तो समान जनक पिता जरासंध के नाम पर इनका समर्थन पूरा-पूरा हासिल हो सकता है, जो कुर्मी जरासंध वंशी है, वह हमारे साथ हो सकता है ।

''रवानी गर्व से कहो, हम चन्द्रवंशी राजपूत हैं'', पम्पलेट में मैं कहारों को सावधान किया हूँ कि वे चन्द्रवंशी या रवानी कहने की भूल न करे । इस वाक्य से मैं पूरे भारतीय समाज को बताना चाहता हूँ कि जरासंध वंशी (रवानी) को कहार कहने की भूल न करे । कहार और रवानी में बहुत अन्तर है । रामायण काल, महाभारत काल, चन्द्रगुप्त काल, मध्य काल, आधूनिक काल में कहारों का संबंध डोली के साथ है । लेकिन रवानी अत्री, चन्द्र, बुध, ययाति, पुरु, भारद्वाज, कण्व, गर्ग, जरासंध, रिपुञ्जय, चन्द्रावत, मदनवर्मा, परमार जैसे महान राजाओं के वंशज है । रवानी का अर्थ होता है, राजा, स्वामी पती, कहार नहीं ।

जरासंध के शासन काल में भी उनके दरबार का करास्त सरदार सम्राट बनने का उपाय सोच रहा था । यह बात जरासंध को पता लग गया वह बहुत न्याय प्रिय और योगी शासक था योगवल से पल में सभी तीर्थों के जल उपस्तिथत कर देता था । अत: वह एलान किया कि रात भर में जो तीर्थों के

जल कुंड में भर देगा मैं उसको सम्राट मान लूँगा। करास्त सरदार इस बीड़ा को उठाया। इसके लिए वह पूरे परिवार और समाज को इकट्ठा किया और पाँचों तीर्थों के राह में अपने समाज के पाँच लाईन लगा दिया। कुछ लोग बाँस को जमा कर रहे थे तो कुछ लोग रस्सी का तो कुछ बहगी का। इसी बीच में मुर्गे ने बाँग दे दिया। समय पर काम पूर्त्ति न होने के कारण जो लोग रस्सी लेकर भागे वह कुरमी और जो बाँस लेकर भागे कहार तथा जो बंहगी लेकर भागे वह कहार-कुर्मी कहलाया।

इस प्रकार हम पाते हैं कि रवानी न तो कहारों की शाखा है और न कुरमी की शाखा है और नाहीं भविष्य में इन दोनों की शाखा बनेगा। रवानी क्षत्रीय की शाखा है और रहेगा। नन्द के अत्याचार के काले बादल छट गए हैं। चन्द्रवंशी की चन्द्रमा का प्रकाश फिर से इस धरती पर आलोकित हो रहा है।

## रवानी और इतिहास की पन्ना

(1) मख्खन लाल कृत सुखसागर से, शुद्री से उत्पन्न महानन्द नामक राजा मगध के क्षत्रीय को धर्म नष्ट करेगा। यहाँ के क्षत्रीय बुन्देल खंड में जा बसेंगे या राजगृह के आस-पास रहने वाले क्षत्रीय न कहकर 'रवानी' कहेंगे।

(2) चन्देल (रवानी) राजा यशोर वर्मा के पुत्र धाँगा का राज मालावा नदी के किनारे भसवत तक था भसवत का ही नाम आज भिलसा हो गया है जो वेतवा नदी के तट पर है। यही भिलसा टोप है जिस पर लिखा है, रवानी लोग नन्द के अत्याचार से यहाँ भागकर आये हैं।

(3) बंगाल प्रांत की वर्ण और जातियों की जाँच परताल करते समय ट्राइब एवं काष्ट ऑफ बंगाल में श्री मान क्रुर महोदय लिखते हैं, रवानी अपने आप को महाराज जरासंध के वंशज के दावा करते हैं।''

(4) बंगाल लेखक एच० एस० रेसली भाग-2, पन्ना-1957 में लिखते हैं, ''रवानी बिहार में राजपूतों की शाखा है।''

(5) 1809 ई० में लिखी श्री मान जय नारायण घोष रचित काशी परिक्रमा में, ''रवानी लोग जरासंध से पैदा हुए है।''

(6) हिजहाइनेस महाराजा राणाश्री राजेन्द्र सिंह जी बहादुर भालवाड़ा नरेश (राजपूताना) सभापति अखिल भारतीय क्षत्रीय महासभा के 37वें अधिवेशन में कहते हैं–''हम सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी (रवानी) और नागवंशी क्षत्रीय को मिलकर रहना चाहिए। शादी-विवाह, खान-पान अविलम्ब प्रारम्भ कर देना चाहिए। (क्षत्रीय नवम्बर-दिसम्बर-1935)।

(7) प्रथम रवानी राजा चन्द्रवर्मा ने बुंदलखंड में महोवा राज्य 800 ई० में बसाया।

(8) रवानी राजा हर्षदेव ने महिपाल को 972 ई० में कनौज की गद्दी पर बैठाया।

(9) रवानी राजा कीर्तिवर्मा ने झांसी में देवगढ़ का कीर्तगिरी का किला बनवाया।

(10) रवानी राजा मदन वर्मा ने महोवा में मदनसागर बनवाया।

(11) पटना सिटी चौक मारवाड़ी उच्च विद्यालय के दक्षिण स्टेट बैंक के पश्चिमी गली में जरासंध वंशीय चन्द्रवंशी क्षत्रीय भवन है जिसकी नींव अक्टूबर (आसिवन) सन् 1926 में पड़ा था। इस भवन के मुख्य कार्यकर्त्ता बाबू हीरालाल वर्मा थे।

(12) महाराज जरासंध को विश्व सम्राट का दर्जा प्राप्त था। वह न्याय, धर्मपारायण तथा ब्रह्मण भक्त सम्राट थे। जीवन भर धर्म के आचरण किये। उन्होंने ने पहली बार पूरे विश्व को एक सूत्र में बांध दिया। इसके लिए वे राजाओं को मारे नहीं, इन्हें सिर्फ बंदी बनाए या उस देश के साथ विवाह संबंध स्थापित किये। जैसे सिन्धु देश के महारानी शीला जो दुर्योधन की भगनी थी से, मलेक्ष देश (आज का मिस्र) की कन्या दु:शीला से तथा सुमित्रा से महाराज जरासंध विवाह किये। पतालपूरी (आज का अमरिका) के उपाच्चय राजा को बंदी बनाए।

(13) ब्रह्मचारिणी जरा देवी थी, राक्षसी नहीं। वह नारद के गुरु काल या कालू बाबा की बेटी थी। नारद के आज्ञा से ही वह मगध में आयी। वनवासियों की सुरक्षा करने के कारण वनदेवी, वंदी या वन्नी कहलायी।

जरासंध को जीवित करने के कारण गृहलक्ष्मी या कार्तिक माह में पूजे जाने वाली छठी माई कहलायी क्योंकि सनातन धर्म के अनुसार, जरासंध काल में पाँच देवियों की पूजा होती थी षष्ठी या छठी माई के रूप में इन्हें स्वीकार किया गया। [ विष्णु और मार्कण्डय पुराण से ]

(14) अखिल भारतीय चन्द्रवंशी क्षत्रीय महासभा की स्थापना 1906 ई० में हुई। भारत के लेजिस्ट्रेटीव एक्ट 1860 ई० 21वें एक्ट के अनुसार रजिस्टर्ड सन् 1912 ई० नं० 349/5 है।

सितम्बर 1970, भारत के वृतहद् इतिहास, इतिहासकार रामचन्द्र मजुमदार, पृष्ट 226 के अनुसार, शिवाजी के पिता शाहजी थे, जो मेवाड़ के सिसोदिया वंश के थे। मेवाड़ में सिसोदिया चन्द्रवंशी होने का दावा करता है, पर विपत्ति कारण कहारों के संवर्ग में चला गया है। शिवाजी की माता जीजाबाई देवगिरि यादव शासकों की पुत्री थी। इतिहास से यह सिद्ध होता है कि शिवाजी चन्द्रवंशी ही थे अतः चन्द्रवंशियों से अपिल करते हैं कि वे जरासंध जयन्ति के साथ शिवाजी जयन्ति भी मनाये तथा इससे सबक भी ले। अपने संस्कृति के प्रति सजग रहे अन्यथा हमारी संस्कृति को लोग नष्ट करने पर तुले हैं।

**'शमित्योम् तत्सत्'**

चन्द्रवंशी प्रेस, पटना - 7